SHODHSAMHITA
शोधसंहिता
ISSN 2277-7067
UGC CARE Group 1

"कक्षा नवी के छात्र तथा छात्राओं की समायोजन समस्या पर एक अध्ययन"

श्रीमती रीनी करुणानिधि
सहा. प्राध्यापक (शिक्षा संकाय), भिलाई मैत्री कॉलेज, रिसाली, भिलाई (छ.ग.)

डॉ. प्रगा आर कुरुप
सहा. प्राध्यापक (शिक्षा संकाय), भिलाई मैत्री कॉलेज, रिसाली, भिलाई (छ.ग.)

सारांश

प्रस्तुत शोध में हाई स्कूल के विद्यार्थियों के समायोजन समस्या का मापन किया गया है। प्रायः यह देखने को मिलता है कि समान आयु वर्ग के और योग्यता से छात्र, छात्राओं के परीक्षाफलों में अंतर होता है अतः इन अंतरो का कारण क्या है, क्यों शाला में जितने भी विद्यार्थी अध्ययनार्थ जाते हैं उन सभी के लिए शाला की सामान्य दशा शिक्षकों की योग्यता में शिक्षण पद्धति एक ही रहती है फिर भी उनके परीक्षाफलों में अंतर मिलता है इन अंतरो का प्रमुख कारण परिवार की सामाजिक आर्थिक स्थिति, मानसिक, शारीरिक, बौद्धिक क्षमता में विभिन्नता होना जिसके कारण वे शाला में अन्य छात्रों एवं वहाँ के शिक्षकों के साथ सामायोजन स्थापित नहीं कर पाते। अतः इस बात की जानकारी प्राप्त करने के लिए एवं उनके परीक्षाफलों में अंतर को जानने के लिए शोधकर्ता ने यह समस्या चुनी है जिसमें यह जानने का प्रयास किया गया है कि आखिर यह अंतर क्यों है?

कुंजी शब्द – समायोजन, किशोरावस्था

प्रस्तावना

मानव जीवन में समाज का अत्यधिक महत्व है। यदि संतुलित समायोजन नहीं होता है तो व्यक्ति का संपूर्ण व्यक्तित्व विघटित हो जाता है आज की दुनिया में सामायोजन एक बहुत बड़ी समस्या है। प्रत्येक व्यक्ति की कुछ न कुछ समस्याएँ और परेशानियाँ होती है। किसी व्यक्ति की व्यक्तित्व प्रभावशीलता एक

ISSN 2277-7067
UGC CARE Group 1

बात पर निर्भर नहीं करती है कि वह कितने समस्याओं का सामना करता है बल्कि इस बात पर निर्भर करता है कि वहीं समस्याओं के प्रति किस प्रकार की प्रतिक्रिया करता है वह इनमें किस प्रकार के समायोजन करता है। समायोजन मनोविज्ञान का महत्वपूर्ण अंग नहीं है बल्कि प्रत्येक मनुष्य की यह एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया या अवस्था है।

समायोजनः– व्यक्ति की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि उसके समायोजन समाज और वातावरण से समुचित रूप से हो। समायोजन से तात्पर्य उस सीमा से है जहां तक कोई व्यक्ति दूसरे व्यक्तियों के साथ उपयुक्त सामाजिक संबंध रखने में सफल होता है।

समायोजन निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। साथ ही व्यक्ति परिस्थिति तथा पर्यावरण के मध्य अपने को समायोजित करने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है। अतः समायोजन को संतुलित दशा कहा गया है।

किशोरावस्थाः– मानव जीवन के विकास की प्रक्रिया में किशोरावस्था का महत्वपूर्ण स्थान है। बाल्यावस्था समाप्त होती है और शुरू होती है किशोरावस्था। यह अवस्था युवावस्था तक परिपक्वतावस्था तक रहती है। यह सतत प्रक्रिया है। इसे बाल्यावस्था तथा प्रौढ़ावस्था के मध्य का संधि काल कहते हैं। इस अवस्था की विडंबना होती है कि बालक स्वयं को बड़ा चमकता है और बड़े उसे छोटा समझते हैं।

अध्ययन की आवश्यकताः– आज की भागदौड़ की जिंदगी मनुष्य को ज्यादा थकान देती है। जो उनकी समायोजन क्षमता को कम कर देती है और यह समस्या किशोर बच्चों को ज्यादा प्रभावित करती है। इस समायोजन संबंधी समस्याओं को सुलझाने के लिए बालक के समायोजित जोहार के अध्ययन के माध्यम से समझना एवं उनकी आवश्यकताओं एवं इच्छाओं की पूर्ति में परिस्थितियों का संतुलन बनाकर विभिन्न क्षेत्रों जैसे घरेलू, सामाजिक आर्थिक एवं भावनात्मक स्तर पर उसे समायोजित करना इस अध्ययन का प्रयोजन है।

ISSN 2277-7067
UGC CARE Group 1

संबंधित शोध अध्ययन

1. यादव कुमार (2018) ने उच्च माध्यमिक स्तर में एकल एवं सह शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत किशोर किशोरियों के समायोजन स्तर का अध्ययन किया और यह पाया कि उच्च माध्यमिक स्तर के सह शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत किशोर एवं किशोरियों के समायोजन में सार्थक अंतर है और किशोर चाहे वह वह सह शिक्षण का हो या एकल शिक्षण संस्थान का उसके समायोजन में सार्थक अंतर पाया जाता है।

2. सिंह अंजू बाला (2019) ने माध्यमिक शाला में अध्ययनरत दिव्यांग बालक एवं दिव्यांग बालिकाओं की समायोजन

क्षमता का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया और पाया की माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत दिव्यांग बालक एवं दिव्यांग बालिकाओं की समायोजन क्षमता में सार्थक अंतर नहीं होता है। माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत दिव्यांग बालक एवं दिव्यांग बालिकाओं की भावनात्मक समायोजन क्षमता में सार्थक अंतर होता है। और उनकी सामाजिक समायोजन

क्षमता में सार्थक अंतर नहीं होता है।

3. अग्रवाल व महार (2020) ने ग्रामीण क्षेत्रों के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में विद्यालय वातावरण वह उनकी संवेगात्मक अवस्था का उनके समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया और यह निष्कर्ष पाया कि कुल विद्यार्थियों में से 87 प्रतिशत विद्यार्थी विद्यालय के वातावरण में समायोजित पाए गए किंतु 13 प्रतिशत विद्यार्थी विद्यालय के वातावरण में स्वयं को समायोजित करने में सफल नहीं हो पाए और कुल विद्यार्थियों में से 67.6 प्रतिशत विद्यार्थी संवेगात्मक रूप से समायोजित पाए गए किंतु 32.4 प्रतिशत विद्यार्थी स्वयं को संवेगात्मक रूप से समायोजित नहीं कर पा रहे हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

- ❖ कक्षा नवमीं के छात्र एवं छात्राओं के समायोजन समस्या का मापन करना।
- ❖ कक्षा नवमीं के छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक समस्या का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- ❖ कक्षा नवमीं के छात्र एवं छात्राओं के संवेगात्मक समायोजन समस्या का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- ❖ कक्षा नवमीं के छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक समायोजन समस्या का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना

- ❖ कक्षा नवमीं के छात्र एवं छात्राओं के समायोजन समस्या के मध्य सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।
- ❖ कक्षा नवमी के छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक समायोजन समस्या के मध्य सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।
- ❖ कक्षा नवमीं के छात्र एवं छात्राओं के संवेगात्मक समायोजन समस्या के मध्य सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।
- ❖ कक्षा नवमीं के छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक समायोजन समस्या के मध्य सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध में यादृच्छिक चयन विधि का उपयोग करते हुए न्यादर्श के रूप में दुर्ग जिले के हाई स्कूल के 10 विद्यालयों को लिया गया व प्रत्येक विद्यालय में से 10–10 विद्यार्थियों का चयन किया गया। अतः न्यादर्श के लिए कुल 100 विद्यार्थियों को लिया गया है।

उपकरण

कक्षा नवमी के विद्यार्थियों की समायोजन समस्या का अध्ययन करने के लिए शोधकर्ता ने ए. के. पी. सिन्हा और आर. पी. सिंग द्वारा निर्मित समायोजन मापनी उपकरण की सहायता ली है। इस मापनी के आधार पर छात्रों एवं छात्राओं के संवेगात्मक सामाजिक एवं शैक्षिक समायोजन के आंकड़ों एकत्र किए गए। इस समायोजन मापनी उपकरण में कुल 60 प्रश्न प्रश्नों का निर्माण किया गया है। फलांकन के लिए दिए गए निर्देशानुसार अंको का वितरण किया गया है। जो पद समायोजन को सूचित करती है उसे शून्य अंक देते हैं और जो पथ समायोजन को सूचित नहीं करती है उसे एक अंक देते हैं।

प्रदत्तों की प्राप्ति पर विश्लेषण एवं विवेचना

प्रस्तुत लघु शोध में निजी एवं शासकीय स्कूल के कक्षा नवमीं के विद्यार्थियों की समायोजन समस्या से संबंधित आंकड़ों का विश्लेषण, विवेचना एवं निष्कर्ष हेतु परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है। इसमें चार परिकल्पनाएं हैं।

परिकल्पना H01 कक्षा नवमीं के छात्र एवं छात्राओं के समायोजन समस्या के मध्य सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

उपयुक्त परिकल्पना की पुष्टि के लिए शासकीय एवं निजी संस्थाओं द्वारा संचालित कक्षा नवमी के छात्र एवं छात्राओं की समायोजन समस्या का मापन किया गया। प्राप्त अंकों का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं टी–मूल्य की गणना की गई जिसे सारणी क्रमांक 1 में दर्शाया गया है।

सारणी क्रमांक 1

छात्र एवं छात्राओं की समायोजन समस्या का सांख्यिकी विवरण

समूह	संख्या N	मध्यमान M	प्रमाणिक विचलन S.D.	टी–मूल्य t
छात्र	50	15.8	5.43	0.531
छात्रा	50	15.2	5.86	
स्वतंत्रता अंश df = 98 P>0.05 पर सार्थक नहीं है।				

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि छात्रों की समायोजन समस्या का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन क्रमशः 15.8, 5.43 है तथा छात्राओं की समायोजन समस्या का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन 15.2 व 5.86 है। इन दोनों समूहों के लिए टी–मूल्य का मान 0.531 प्राप्त हुआ जो की स्वतंत्रता की कोटि 98 के लिए 0.05 स्तर पर टी के सारणी मांग मान 1.98 से कम है। अतः 0.05 स्तर पर यह सार्थक नहीं है। अतएव यह परिकल्पना स्वीकृत होती है।

परिकल्पना H02 कक्षा नवमीं के छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक समायोजन समस्या के मध्य सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

उपयुक्त परिकल्पना की पुष्टि के लिए क्षा नवमीं के छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक समायोजन समस्या का मापन किया गया। इन प्राप्त अंकों का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं टी–मूल्य की गणना की गई जिसे सारणी क्रमांक 2 में दर्शाया गया है।

सारणी क्रमांक 2

छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक समायोजन समस्या का सांख्यिकी विवरण

समूह	संख्या N	मध्यमान M	प्रमाणिक विचलन S.D.	टी–मूल्य t
छात्र	50	7.12	2.534	1.229
छात्रा	50	7.8	2.929	
स्वतंत्रता अंश df = 98 P>0.05 पर सार्थक नहीं है।				

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि छात्रों की सामाजिक समायोजन समस्या का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन क्रमशः 7.12 व 2.534 है तथा छात्राओं की सामाजिक समायोजन समस्या का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन 7.8 व 2.929 है। इन दोनों समूहों के लिए टी–मूल्य का मान 1.229 प्राप्त हुआ जो की स्वतंत्रता की कोटि 98 के लिए 0.05 स्तर पर टी के सारणी मांग मान 1.98 से कम है। अतः 0.05 स्तर पर यह सार्थक नहीं है।

ISSN 2277-7067
UGC CARE Group 1

अतएव यह परिकल्पना स्वीकृत होती है।

परिकल्पना H03 कक्षा नवमीं के छात्र एवं छात्राओं के संवेगात्मक समायोजन समस्या के मध्य सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

उपयुक्त परिकल्पना की पुष्टि के लिए कक्षा नवमीं के छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक समायोजन समस्या का मापन किया गया। प्राप्त अंकों का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं टी–मूल्य की गणना की गई जिसे सारणी क्रमांक 3 में दर्शाया गया है।

सारणी क्रमांक 3

छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक समायोजन समस्या का सांख्यिकी विवरण

समूह	संख्या N	मध्यमान M	प्रमाणिक विचलन S.D.	टी–मूल्य t
छात्र	50	4.24	2.74	2.337
छात्रा	50	2.92	2.85	
स्वतंत्रता अंश df = 98 P<0.05 पर सार्थक है।				

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि छात्रों की संवेगात्मक समायोजन समस्या का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन क्रमशः

4.24 व 2.74 है तथा छात्राओं की संवेगात्मक समायोजन समस्या का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन 2.92 व 2.85 है। इन दोनों समूहों के लिए टी–मूल्य का मान 2.337 प्राप्त हुआ जो की स्वतंत्रता की कोटि 98 के लिए 0.05 स्तर पर टी के सारणी मांग मान 1.98 से अधिक है। अतः 0.05 स्तर पर यह सार्थक है। अतएव यह परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

परिकल्पना H04 कक्षा नवमीं के छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक समायोजन समस्या के मध्य सार्थक अंतर

ISSN 2277-7067
UGC CARE Group 1

नहीं पाया जाता है।

उपयुक्त परिकल्पना की पुष्टि के लिए कक्षा नवमीं के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक समायोजन समस्या का मापन किया गया। प्राप्त अंकों का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं टी–मूल्य की गणना की गई जिसे सारणी क्रमांक 4 में दर्शाया गया है।

सारणी क्रमांक 4

छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक समायोजन समस्या का सांख्यिकी विवरण

समूह	संख्या N	मध्यमान M	प्रमाणिक विचलन S.D.	टी–मूल्य t
छात्र	50	4.46	2.88	0.940
छात्रा	50	5.06	3.412	
स्वतंत्रता अंश df = 98 P>0.05 पर सार्थक नहीं है।				

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि छात्रों की शैक्षिक समायोजन समस्या का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन क्रमशः 4. 46 व 2.88 है तथा छात्राओं की शैक्षिक समायोजन समस्या का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन 5.06 व 3. 412 है। इन दोनों

समूहों के लिए टी–मूल्य का मान 0.940 प्राप्त हुआ जो की स्वतंत्रता की कोटि 98 के लिए 0.05 स्तर पर टी के सारणी मांग मान 1.98 से कम है। अतः 0.05 स्तर पर यह सार्थक नहीं है। अतएव यह परिकल्पना स्वीकृत होती है।

निष्कर्ष

इस शोध कार्य में शोधकर्ता ने परिकल्पनाओं के परिणाम से यह निष्कर्ष निकलता है कि छात्रों और छात्राओं के सामाजिक एवं शैक्षिक समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है। लेकिन छात्रों और छात्राओं के संवेगात्मक समायोजन में सार्थक अंतर होता है।

ISSN 2277-7067
UGC CARE Group 1

- अग्रवाल व महार (2020). ग्रामीण क्षेत्रों के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में विद्यालय वातावरण वह उनकी

  संवेगात्मक अवस्था का उनके समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन, जनरल ऑफ इमर्जिग टेक्नोलॉजिस एंड इन्नेवेटिव रिसर्च, 7(2).

- यादव, कु (2018). उच्च माध्यमिक स्तर में एकल एवं सह शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत किशोर किशोरियों के

  समायोजन स्तर का अध्ययन, रिमाकिंग एवं एनालिसेशन, 2(11).

- सिंह, ए. (2019). माध्यमिक शाला में अध्ययनरत दिव्यांग बालक एवं दिव्यांग बालिकाओं की समायोजन क्षमता का

  विश्लेषणात्मक अध्ययन, जनरल ऑफ इमर्जिग टेक्नोलॉजिस एंड इन्नेवेटिव रिसर्च, 6(5).

- भटनागर, सुरेश (2005). शिक्षा मनोविज्ञान सूर्या पब्लिकेशन निकट गवर्नमेंट इंटर कॉलेज मेरठ.
- जयसवाल, सीताराम (1999). समायोजन मनोविज्ञान, उत्तर प्रदेश ग्रंथ एकाडमिक लखनऊ.
- पाठक, पी. डी. (1976). शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा.

Platinum ISSN 2231-0096 Volume - 12 Number - 4 December 2021

नक्सल क्षेत्र में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सुरक्षा असुरक्षा की भावना का तुलनात्मक अध्ययन

– श्रीमती. सीनी करुणा निधि
शोधार्थी, सहायक प्राध्यापक (शिक्षा संकाय), मैत्री महाविद्यालय, भिलाई (छ.ग.)

सारांश

प्रस्तुत शोध में नक्सल क्षेत्र में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सुरक्षा असुरक्षा की भावनाका मापन किया गया है। नक्सलवाद साम्यवादी क्रांतिकारियों के अस आंदोलन की अनौपचारिक नाम है जो भारतीय कम्युनिस्ट आंदोलन के फलस्वरूप उत्पन्न हुआ। नक्सल शब्द की उत्पत्ति पश्चिम बंगाल के एक छोटे से गाँव नक्सलबाड़ी से हुई है। जैसा कि हम जानते है की नक्सलवाद छत्तीसगढ के कुछ भागों में अभिशाप की तरह पलप रहा है। इस नक्सलवाद प्रभावित इलाको में वहा रहने वो लोगो में नक्सलवाद से भय का होना सामान्य प्रक्रिया है। अतः हम यह कह सकते है की वहा के स्कूली विद्यार्थियों मे भी इस नक्सलवाद के प्रति सुरक्षा असुरक्षा की भावना होगी ही।

कुंजी शब्द – सुरक्षा असुरक्षा की भावना किशोरावस्था

प्रस्तावना

सुरक्षा व असुरक्षा की भावना

सुरक्षा – सुरक्षा की भावना से तात्पर्य सुरक्षित और चिंता मुक्त होने की स्थिति से है। सुरक्षा के अंतर्गत व्यक्तिगत मूल्य आत्म आश्वासन, आत्मविश्वास की भावना भी निहित होती है इन भावनाओं को बच्चों में बचपन से ही विकसित किया जाता है। सुरक्षा की भावना को विकसित करने हेतु पालकों की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण होती है। पालक अपने बच्चो की आधारभूत आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु जितना समर्पित होगे, बच्चों में सुरक्षा की भावना तथा चिंतामुक्त होने की स्थिति उतनी ही अच्छी तरह विकसित होगी। किशोरो में सुरक्षा की भावना को विकसित करने के क्षेत्र में पारिवारिक वातावरण अत्यंत ही महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते है। पारिवारिक वातावरण ही वह आधारभूत है जिस पर बच्चे का व्यक्तिक विकास निर्भर होता है। अतः यह कहा जा सकता है कि बच्चो में सुरक्षा की भावना को विकसित करने के लिए यह अति आवश्यक है कि उसे बचपन से ही सकारात्मक पारिवारिक वातावरण प्रदान किया जाए।

असुरक्षा – असुरक्षा से अभिप्राय आर्थिक तथा सामाजिक सुरक्षा का अभाव होना है। जिसके अंतर्गत आकस्मिक बीमारी, बेरोजगारी, आर्थिक, दुर्घटना, अपंगता आदि जोखिमों से बचने के लिए व्यक्ति एवं सामर्थ्य का न होना सम्मिलित है। एक व्यक्ति स्वयं को असुरक्षित तभी समझता है जब उसमें आश्वासन की कमी के कारण वह स्वयं का आत्मविश्वास खो देता है, जिसमें वह जीवन की प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करने में असमर्थ हो जाता है। यही असमर्थता व्यक्ति में असुरक्षा की भावना को विकसित करती है।

सुरक्षा व असुरक्षा की भावना संबंधी शोध में योगदान – भार्गव, डी., गोयल, ए. एस. (२००२) गोल एस. पी (२००२), गोयल भार्गव (२०००) देशमुख (२००६), जेवियर औश्र बेनोयिट (२०११) शर्मा तथा शुक्ला (२०११), रैना एवं भान (२०१३) तथा भट्टाचार्य (२०१४) ने अपने अध्ययन में पया कि उम्र, लिंग, जन्म स्थान, धार्मिकता के स्तर से सुरक्षा व असुरक्षा की भावना प्रभावित होती है। छात्र एवं छात्रों के सुरक्षा असुरक्षा की भावना के मध्य सार्थक अंतर पाया गया। छात्राओं में छात्रों की अपेक्षा असुरक्षा की भावना अधिक है तथा एकल परिवार के किशोरो की संयुक्त परिवार के किशोरो में असुरक्षा की भावना अधिक है। कामकाजी माताओं के किशोरो में उच्च असुरक्षा की भावना तथा अवसाद की भावना पाया गया।

अध्ययन का उद्देश्य

१) नक्सल क्षेत्र में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सुरक्षा–असुरक्षा की भावना का अध्ययन करना।

२) नक्सल क्षेत्र में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की पारिवारिक सुरक्षा की भावना का अध्ययन करना।

३) नक्सल क्षेत्र में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की विद्यालयीन सुरक्षा की भावना का अध्ययन करना।

४) नक्सल क्षेत्र में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के साथी समूह सुरक्षा की भावना का अध्ययन करना।

परिकल्पना

एच १ – नक्सल क्षेत्र में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सुरक्षा–असुरक्षा की भावना में कोई सार्थक अंतर नही पाया जायेगा।

एच २ – नक्सल क्षेत्र में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की पारिवारिक सुरक्षा की भावना में कोई सार्थक अंतर नही पाया जायेगा।

एच ३ – नक्सल क्षेत्र में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की विद्यालयीन सुरक्षा की भावना में कोई सार्थक अंतर नही

पाया जायेगा।

एच ४ – नक्सल क्षेत्र में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के साथी समूह सुरक्षा की भावना में कोई सार्थक अंतर नही पाया जायेगा।

न्यादर्श – प्रस्तुत शोध में यादृच्छिक चयन विधि का उपयोग करते हुए न्यादर्श के रूप में नक्सल क्षेत्र के शासकीय स्कूल के १८ छात्राओं और २० छात्रो का चयन किया गया। अत: न्यादर्श के लिए कुल ३८ विद्यार्थियों को लिया गया है।

उपकरण – सुरक्षा - असुरक्षा की भावना का परीक्षण प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा विद्यार्थियों का मापन करने हेतु प्रो. बीना शाह द्वारा मानकीकृत किया गया सुरक्षा-असुरक्षा स्केल का प्रयोग किया जायेगा। सुरक्षा असुरक्षा स्केल में ८ आयामों के आधार पर ७५ पद है। इस उपकरण की विश्वसनीयता गुणांक ८१ एवं इसी वैधता उच्च कोटी की है।

प्रदत्तो की प्राप्ति पर विश्लेषण एवं विवेचना – शोधार्थी ने अपने शोध विषय की परिकल्पनाओं हेतु आवश्यक समंको का संकलन वर्गीकरण, सारणीयन, प्रस्तुतीकरण एवं सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग कर विश्लेषण एवं विवेचन प्रस्तुत किया है, जो निम्नानुसार है –

परिकल्पना (H_1) – नक्सल क्षेत्र में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सुरक्षा-असुरक्षा की भावना में कोई सार्थक अंतर नही पाया जायेगा।

तालिका १

समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी–मूल्य
छात्रा	18	118	14.39	4.347
छात्र	20	88	26.88	

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि छात्राओं की सुरक्षा असुरक्षा की भावना का मध्यमान एवं प्रमापविचलन क्रमश: ११८, १४.३९ है तथा छात्रो की सुरक्षा असुरक्षा की भावना का मध्यमान एवं प्रमापविचलन क्रमश: ८८, २६.८८ है। इन दोनो समूहो के लिए टी-मूल्य का मान ४.३४७ प्राप्त हुआ जो कि स्वतंत्रता की कोटि ३६ के लिए ३६ के लिए ०.०५ स्तर पर टी के सारणी मान २.०२ से अधिक है। अत: ०.०५ स्तर पर यह सार्थक है। अतएव यह परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

परिकल्पना (H_2) – नक्सल क्षेत्र में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की पारिवारिक सुरक्षा की भावना में कोई सार्थक अंतर नही पाया जायेगा।

तालिका २

समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी–मूल्य
छात्रा	18	17	3.30	0.27
छात्र	20	16.6	5.64	

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि छात्राओं की पारिवारिक सुरक्षा की भावना का मध्यमान एवं प्रमापविचलन कमश: १७, ३.३० है तथा छात्रो की पारिवारिक सुरक्षा की भावना का मध्यमान एवं प्रमापविचलन क्रमश: १६.६, ५.६४ है। इन दोनो समूहो के लिए टी-मूल्य का मान ०.२७ प्राप्त हुआ जो कि स्वतंत्रता की कोटि ३६ के लिए ०.०५ स्तर पर टी के सारणी मान २.०२ से कम है। अत: ०.०५ स्तर पर यह सार्थक नहीं है। अतएव यह परिकल्पना स्वीकृत होती है।

परिकल्पना (H_3) – नक्सल क्षेत्र में अध्ययनरत् छात एवं छात्राओं की विद्यालयीन सुरक्षा की भावना में कोई सार्थक अंतर नही पाया जायेगा।

तालिक ३

समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी–मूल्य
छात्रा	18	8.9	2.5	2.88
छात्र	20	15	5.45	

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि छात्राओं की विद्यालयीन सुरक्ष की भावना का मध्यमान एवं प्रमापविचलन क्रमश: १८.९, २.५ है तथ छात्रो की विद्यालयीन सुरक्षा की भावना का मध्यमान एवं प्रमापविचलन क्रमश: १५, ५.४५ है। इन दोनो समूहो के लिए टी-मूल्य का मा २.८८ प्राप्त आ जो कि स्वतंत्रता की कोटि ३६ के लिए ०.०५ स्त पर टी के सारणी मान २.०२ से अधिक है। अत: ०.०५ स्तर पर य सार्थक है। अतएव यह परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

परिकल्पना (H_4) – नक्सल क्षेत्र में अध्ययनरत् छात्र ए छात्राओं के साथी समूह सुरक्षा की भावना में कोई सार्थक अंतर न पाया जायेगा।

तालिका ४

समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी–मूल्य
छात्रा	18	18.6	3.23	2.60
छात्र	20	14.95	5.29	

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि छात्राओं की साथी समूह सुरक्षा व भावना का मध्यमान एवं प्रमापविचलन क्रमश: १८.६, ३.२३ है त छात्रो की साथी समूह सुरक्षा की भावना का मध्यमान एवं प्रमापविचल क्रमश: १४.९५, ५.२९ है। इन दोनो समूहो के लिए टी-मूल्य व मान २.६० प्राप्त हुआ जो कि स्वतंत्रता की कोटि ३६ के लिए ०.० स्तर पर यह सार्थक है। अतएव यह परिकल्पना अस्वीकृत होती है

निष्कर्ष – इस शोध कार्य में शोधकर्ता ने परिकल्पनाओं पारिणाम से यह निष्कर्ष निकलता है कि छात्र एवं छात्राओं की सुरक्षा असुरक्षा की भावना में सार्थक अंतर पाया गया लेकिन छात्र एवं छात्रा के पारिवारिक सुरक्षा में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। और य भी पाया गया कि छात्र एवं छात्राओं के विद्यालयीन सुरक्षा और सा समूह सुरक्षा में भी सार्थक अंतर पाया गया।

संदर्भ

१) भार्गव, डी. ऐट ऑल (२००२), किशोरो के व्यक्तित्व के आय के आधार पर उनकी सुरक्षा-असुरक्षा एवं आत्मविश्वास पर अध्ययन जर्न ऑफ साइको कलचरल डायमेन्सन, मेरठ, ४३(१ १८-२१.

२) गोल, एस. पी. (२००२), किशोर बालिकाओं की सुरक्षा भावना, पारिवारिक लगाव और मूल्यों का उनकी शैक्षिक उपल के संबंध पर एक अध्ययन. इंडियन जर्नल ऑफ साइकोमेट्री

एज्युकेशन, ३३(१), २५-२८.
सिंह, एम. शर्मा, पी और शुक्ला ए. (२०१३), उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की सुरक्षा असुरक्षा की भावना का एक तुलनात्मक अध्ययन. एशियाई विज्ञान, ६(१), ९-११.
भटनागर, सुरेश (२००५), शिक्षा मनोविज्ञान सूर्या पब्लिकेशन निकट गवर्नमेंट इंटर कॉलेज, मेरठ.
पाठक, पी. डी. (१९७६), शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.

□ □ □